जायसी काव्य में प्रम व काव्य का चित्रण

— डॉ. कमलकिशोर गुप्ता

जायसी काव्य में प्रेम भावना : सूफी साधना और साहित्य में 'प्रेम' का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी साधना प्रेम की साधना है। सूफी मत बह्वाचार के विरुद्ध ईश्वर के प्रति उद्बुद्ध हुई नैसर्गिक अनुरक्ति का परिणाम था, अतः सूफियों की संपूर्ण साधना प्रेम पर आश्रित है। ईश्वर को प्रियतम के रुप में माना गया । उनके लिए वह अर्मूत होता हुआ भी मूर्तिमान सौंदर्य है, माधुर्य लोभ का पाासक है और प्रेम का प्रचारक है। वह प्रणय पात्र बनकर केवल प्रियतम बनने का ही अधिकारी नहीं बरन् वह स्वयं भी प्रेमी के लिए तड़पन वाला है। इस प्रकार सूफियों में ईश्वर और जीव की भिन्नता है। जीव ईश्वर का अंश है, अतः वही प्रेमी है और वही प्रियतम। प्रेमी कवि बरकतुल्ला ने कहा है कि वहीं ईश्वर, कहीं प्रेमी और कहीं प्रियतम तथा कहीं स्वयं प्रेम है।''[1]

''कहीं माशूक कर जाना कहीं आशिक सितां माना।
कहीं खुद इश्क ठहराना, सुनो लोगों सुरवाबानी।।''

सूफियों ने प्रतीकों के माध्यम से जीव और ब्रम्ह के प्रेम का प्रतिपादन किया। सूफियों ने **सांसारिक** प्रेम (दाम्पत्य–प्रेम) को दैवी प्रेम का प्रतीक माना। उन्होंने अपने काव्य में किसी रमणी (नायिका) को ब्रम्ह का प्रतीक मानकर जीवन के ईश्वर की कांता रति को ही प्रधानता दी है। यही उनका साध्य है। प्रियतम प्रभु (पद्मावती) से जीव या साधक (रत्नसेन) दूर है, परंतु यह दूरी नगण्य है। उससे मिलने की उत्कंठा और उसके दीदार की लालसा कभी कम नहीं होती है — '

'बसै मीन जल धरती, अम्बा बसै अकारा।
जो पिरीत पै दुर्धोमह, अंत हो हिं एक पास।।''[2]

जायसी प्रेम के रहस्य को खूब समझते थे। उनकी दृष्टि में प्रेम गुरु या पीर की महान देन है। अपने संबंध में उन्होंने स्तुति खंड में लिखा है — सैय्यद अशरफ नाम के एक अच्छे पीर है। उन्होंने ही मेरे हृदय में प्रेम का दीपक जलाया है, जिसकी ज्योति से हृदय निर्मल हो गया है।

यथा सैय्यद असरफ पीर पियारा, जेहि मोहि पंथ दीन्ह उजियारा। लेसा हियें प्रेम कर दीया, उठी जोति भी निरमल हीया। इस प्रेम के बंधन में जो एक बार बंध जाता है वह फिर इससे मुक्त नहीं हो पाता। इस प्रेम से अनुप्राणित साधक को प्रेम के अतिरिक्त संसार में कुछ भी मधुर नहीं लगता है। रतनसेन तोते रुपी गुरु के मुख से पद्मावती का रुप — वर्णन सुनकर यह अनुभव करने लगता है कि तीन लोक, चौदहों खंडों में प्रेम से अधिक मधुर कोई वस्तु नहीं है।

''तीनि लोक चौदह खंड, सबै परै मोहि सूझिं।
प्रेम छाँड़ि नहीं लोन किछु, जो देखा मन बूझि।। (राजा — सुआ — संवाद — खंड)

इस प्रेम में बड़ी ही मोहक शक्ति है। मोहक होते हुए भी इसकी साधना सरल नहीं है। आदर्श एवं पवित्र प्रेम — साधना बड़ी कठिन है। इसमें आत्मसमर्पण करने से ही आनंद की प्राप्ति होती है।

जायसी का कहना है कि यह प्रेम पथ अनेक कठिनाइयों से पूर्ण है और प्रेमी अपनी प्रेयसी को प्राप्त करने के लिए कठिन प्रयत्न करता है तथा अनेक कष्ट सहता है। इस प्रेम में दुःख अवश्य है पर उस दुख में भी प्रेमी एक प्रकार के आनंद की ही अनुभूति करता है और उसी दुख की आँच में उसके हृदय की कलुशता धुल जाती है तथा वह अपने प्रियतम को प्राप्त करने का अधिकारी हो जाता है। वास्तव में वह दुख इसी समय तक है, जब तक प्रियतमा से भेंट नहीं होती और संयोग के पश्चात् तो जन्म जन्म का दुख मिट जाता है।

भलेहि प्रेम है कठिन दुलेहा। दुई जग तरा प्रेम जेइ खेला।।
दुखः भीतर जो प्रेम मधु राखा। जग नहिं मरन सहै जो चाखा।।
जो नहीं सीस प्रेम पथ लावा। सो प्रिथिमी महै काहे का आवा।।
तौलगि दुख पीतम नहिं भेंटा। मिलै तो, जाई जनम दुख मेटा।।

वास्तव में रत्नसेन — पद्मावती का प्रेम प्रारंभिक अवस्था में एकांगी होकर भी अंत में तुल्यानुराग का रुप धारण कर लेता है। इस बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र लिखते हैं — ''जायसी उस आदर्श प्रेम के उपासक थे, जो मनुष्य को देवत्व की ओर अग्रसर करता है और जिसमें मनुष्य अपनी पृथक सत्ता को मिटाकर अपने प्रिय में लीन होने की प्रबल इच्छा रखता है। इसी प्रेम की गूढ़ व्यंजना पद्मावत में हुई है। रत्नसेन और पद्मावती की प्रेम कथा के सहारे कवि ने उस विशुद्ध प्रेम की व्यंजना की है, जो मनुष्य को परमात्मा से मिलाने वाला है।''[3]

उपर्युक्त पंक्तियों के बारे में अपना मत देते हुए डॉ. गुप्तजी लिखते है — ''प्रेम का मार्ग अत्यंत कठिन है फिर भी उसे जो पूर्ण समर्पण भाव से प्राप्त करने की ओर अग्रसर होता है। वही इस संसार से तर जाता है और परमार्थ का रुप प्राप्त कर लेता है। इस कारण जायसी ने प्रेम को जीवन का अनुपम सौंदर्यमय रुप स्वीकार किया है।''[4]

प्रेम मनुष्य के जीवन का एक महत्वपूर्ण तत्व है इस विषय में डॉ. गुप्तजी लिखते हैं – प्रेम जीवन के लिए अनिवार्य है, जिसका क्रम जायसी ने जल और मीनके रुप में जोड़ा है। देखिए –''जल बिनु मीन रकत बिनु काया।''

प्रेम का महत्व मानव जीवन में अत्यधिक है। प्रेम के बिना मानव जीवन व्यर्थ ही हैं क्योंकि जिस प्रकार जल बिना मछली नहीं रह सकती, उसी प्रकार प्रेम बिना प्राणी (मानव) नहीं रह सकता। जैसे शरीर बिना रक्त के निष्प्राण है उसी प्रकार प्रेम बिना जीवन। प्रेमी द्वय का पारस्परिक संबंध इसीलिए जल और मीन का है।

जायसी काव्य में सौंदर्यानुभूति :– प्रेम और सौंदर्य का संबंध चोली–दामन का है – जहाँ प्रेम है वहाँ सौंदर्य है, और जहाँ सौंदर्य है वहाँ प्रेम । चूँकि सूफियों का प्रधान प्रतीक है 'प्रणय' और उसका आलम्बन है प्रियतम माशूक, अतः इस प्रियतम की यह विशेषता है कि यह सुंदरतम् ही नहीं अपितु सौंदर्य का मूल स्त्रोत है तथा उसकी आभा यत्र–तत्र सर्वत्र ज्योर्तित हो रही है। एक विचारक के शब्दों में – ''सौंदर्य वह है जो वास्तव में प्रेम को जन्म देता है। अतः आत्मा की दृष्टि सांसारिक सौंदर्य से गुजरते हुए अन्यत्र लगी रहती है। पूर्ण सौंदर्य ईश्वर में है, अतः वही सच्चे प्रेम का अधिकारी भी है।'' [5]

पद्मावती के दिव्य सौंदर्य की अभिव्यक्ति पद्मावत में अनेक स्थलों पर की गई है। रत्नसेन तोते के मुख से पद्मावती के सौंदर्य का वर्णन सुनकर उसके प्रेम में विव्हल हो उठता है। पद्मावती के सौंदर्य को सूर्य के समान ज्योर्तिमय जानकर वह उसके रुप में तन्मय हो जाता है और तोते रुपी पंडित के बार–बार उसी रुप के वर्णन का आग्रह करता है। आगे जायसी ने पद्मावती के सौंदर्य के वर्णन में पद्मावती के मधुर मुस्कान के आनंद को समष्टि गत कर दिया।

'अधर सुरंग अभी रस भरे ... केहि मुख जोग जो अमृत बसा' यहाँ पर पद्मावती के अधरों की कल्पना को जायसी ने उत्कृष्ट उपमानों को संजोकर साकार रुप प्रदान किया है जिसमें आलौकिक सौंदर्य की सृष्टि की गयी है। 'पद्मावती' की मधुर मुस्कान में अरुणिमा प्रभात की झलक पाई गई है, जिससे सृष्टि में आनंद का बोध कराया गया है। यह कवि की कल्पना का रागात्मक संश्लिष्ट रुप है। पद्मावति के सौंदर्य वर्णन करते हुए कवि जायसी की कल्पना अनंत सौंदर्य से मिल जाती है, जिसके फलस्वरुप पद्मावती के सौंदर्य की ज्योति की झलक को कवि सूर्य, चंद और संपूर्ण देदीप्यमान पदार्थों में देखने लगता है। यथा – ''जेहि दिन दसन ज्योति निरमई। बहुतै जोति–जोति ओहि भई।।

''रवि ससि नखत दिपाहि ओहि जोती। रतन पदारथ मानिक मोती।।''

आचार्य रामचंद शुक्ल को इसी कल्पना या भाव की तन्मयता में सौंदर्यानुभूति के आनंद की प्रतीति होती है। शुक्लजी के अनुसार –''जिस कवि को रसात्मक स्थलों की पहचान जितनी अधिक होगी वह उतना ही श्रेष्ठ कहा जायेगा।''[6]

जायसी में सौंदर्यानुभूति के आनंद की अवस्था पद्मावती के सौंदर्य वर्णन में आलौकिक आनंद के साथ प्राप्त होती है। कवि ने प्रकृति के सुंदरतम उपकरणों में उसी सौंदर्य की झलक सदैव देखी है। एक विचारक के अनुसार – ''जायसी ने पद्मावती के सौंदर्य वर्णन में पद्मावती के मधुर मुस्कान के आनंद को समाविष्ट कर दिया। उसकी मधुर मुस्कान से चंदमा की ज्योति छिटकी, सरोवर के समस्त कुमुद खिल उठे, उसका रुप सौंदर्य दर्पण की भाँति चमक उठा। जिसने भी अपना प्रतिबिम्ब जिस भाव से पद्मावती के सौंदर्य रुप में देखा उसको वही झलक दिखलायी पड़ी। इस प्रकार कवि को पद्मावती के सौंदर्य में अलौकिक सौंदर्य का आभास हुआ, जिसमें **निमज्जित** होकर प्रकृति की व्यष्टि ने सुंदरता में समष्टि की झलक देखी। यथा – 'नयन जो देखा कँवल भा निरमल नीर सरीर।'

जायसी ने काव्य में कल्पनाओं का साकार कलेवर सुंदरता के साथ सजाया गया है। डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र के अनुसार – ''जायसी ने पद्मावत की नायिका पद्मावती के रुप की कल्पना को स्थूल रुप देने के लिए कवि परंपरा में प्रचलित समस्त उपमानों को एकत्रित करके सौंदर्यात्मक संश्लेषण किया है।''[7]

अस्तु समग्ररुप से कहा जा सकता है पद्मावत का मूल कथ्य प्रेम है, इस प्रेम भावना का मूलाधार सौंदर्य है, जायसी ने सौंदर्य के समस्त उपमान भारतीय ही अपनाएँ है, न कि फारसी, इस संबंध में यह भी विचारणीय है कि जायसी ने सौंदर्य – भावना में डूबकर पद्मावती का जो नख शिख वर्णन किया है, वह परंपराबद्ध ही है। श्री राजनाथ शर्मा के अनुसार – 'प्रेम गाथाकारों की नायिकाएँ सौंदर्य की साक्षात् प्रतिमूर्ति तो अवश्य थी, परंतु श्रद्धास्पद नहीं, इसीलिए उन्होंने सौंदर्य वर्णन की स्वाभाविक प्रक्रिया को अपनाते हुए ही उनके सौंदर्य का वर्णन मुखमण्डल से आरंभ किया था न कि विदेशी फारसी परंपरा के अंधानुकरण के कारण।''[8]

संदर्भ सूची :–

1 जायसी का पद्मावत – डॉ. सरोजनी पाण्डेय, पृ७ठ 44

2 जायसी का पद्मावत – डॉ. सरोजनी पाण्डेय,पृ७ठ 44

3 साहित्यिक निबंध – डॉ. दुर्गाक्षंकर मिश्र, पृ७ठ 115

4 जायसी काव्य : प्रतिभा और संरचना – डॉ. हरिहरप्रसाद गुप्त पृ७ठ 69

5 जायसी काव्य : प्रतिभा और संरचना – डॉ. हरिहरप्रसाद गुप्त पृ७ठ 64

6जायसी का पद्मावत – डॉ. सरोजनी पाण्डेय, पृ७ठ 49

7 त्रिवेणी – आचार्य रामचंद शुक्ल, पृ८ठ 114

8 जायसी के ग्रंथों का काव्यक्षास्त्रीय सौंदर्य – दयाक्षंकर मिश्र पृ७ठ 142

डॉ. कमलकिशोर एस. गुप्ता
भा८ा विभागाध्यक्ष
छादा रामचन्द बारवरू
सिन्धु महाविद्यालय
नागपूर – 17
मोबाईल